REVIEW OF RESEARCH

शिक्षण व्यवसाय के प्रति बी0 एड0 के विधार्थियों की अभिवृति का अध्ययन

ISSN: 2249-894X
IMPACT FACTOR : 5.7631(UIF)
UGC APPROVED JOURNAL NO. 48514
VOLUME - 8 | ISSUE - 8 | MAY - 2019

डॉ. श्रीमती सुचिता इलायस

प्रवक्ता बी. एड. विभाग , सेन्ट ऐन्ड्रयूज कॉलेज गोरखपुर यू.पी.

प्रस्तावना–

समाज अथवा राष्ट्र के लिए सबसे महत्वपूर्ण होता है मानव। कोई भी राष्ट्र उस समय ही उन्नति के पथ पर अग्रसर हो सकता है जबकि उसके अन्दर प्रत्येक मानव को यह स्वतंत्रता हो कि वह सुविधापूर्वक अपना उतना विकास कर सके जितना कि उसमें विकास करने की क्षमता है। प्रत्येक व्यक्ति के अन्दर शक्तियों को विकास करने का अवसर प्राप्त होता है तो वह अपनी क्षमता के अनुसार विकसित होती है तथा यह कार्य शिक्षा के माध्यम से किया जाता है।

''शिक्षा द्वारा एक पीढ़ी के लोगों में संस्कृति का संक्रमण करते है ताकि वो उसका संरक्षण कर सके और यदि सम्भव हो तो उसका उत्थान (उन्नति) भी कर सकें।''

परम्परागत रूप से माता–पिता ही बालक के प्रारम्भिक वर्षो के विकास के प्रति उत्तरदायी होते हैं, जब बालक का शारीरिक विकास हो रहा होता है, उसके संवेगात्मक तथा सामाजिक विकास की नींव रखी जाती है।उस समय माता–पिता का प्रभाव ही सबसे महत्वपूर्ण होता है किन्तु वर्तमान काल में परिवार का प्रभाव ही सबसे महत्वपूर्ण होता है। वर्तमान काल में परिवार का महत्व बालक के विकास में कम हो गया है, तब भी बालक के माता–पिता साथ रहते है, तब भी बालक पर कम ध्यान दे पाते हैं अथवा माता–पिता दोनों के पास समय का अभाव होता है, दोनो को अपने कार्यों से फुरसत नहीं मिल पा रही है अथवा उन्हें ठीक से ज्ञात भी नहीं होता कि बालक का उत्तम विकास किस प्रकार हो सकता है? इन सभी कारणों से तथा बालक का समुचित विकास आज पूर्णरूपेण परिवार द्वारा ही सम्भव नहीं है। अतः उसको औपचारिक रूप से शिक्षण देने की आवश्यकता प्रतीत होती है। बच्चे के जन्म के कुछ समय बाद ही उसके शिक्षण की प्रक्रिया प्रारम्भ हो जाती है, अर्थात वह सीखना आरम्भ कर देता है, प्रत्येक माता –पिता अपनी सन्तान को यथाशक्ति अधिक से अधिक शिक्षा दिलाने का प्रयास करते है, क्योंकि शिक्षा व्यक्ति शिक्षा समाज की आधारशिला हैं। प्रत्येक शिक्षित एवं सभ्य समाज अपने आदर्शों , मूल्यों एवं संस्कृतियों के संरक्षण के लिए, संरचरण तथा विकास के लिए शिक्षण संस्थानों की स्थापना करता है।

शिक्षाशास्त्री ' **जे0 एस0 मिल**' ने शिक्षण की महिला बताते हुए लिखा है कि–

''शिक्षा द्वारा एक पीढी के लोगों मे संस्कृति का संक्रमण करते हैं ताकि वे उसका संरक्षण कर सके और यदि सम्भव हो तो उसका उत्थान (उन्नति) भी कर सकें।''

1.शिक्षण का सम्प्रत्ययः–

आदिकाल में मानव माँ से ही जीवन की आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु शिक्षण लेता रहा था फिर पित भी योगदान देने लगा। तत्पश्चात् परिवार की रूपरेखा बनने पर यह परिवार के सदस्यों का कार्य हो गया। जब समाज के ढाँचे का निर्माण हुआ तो शिक्षण प्रदान करने के लिए विशिष्ट व्यक्तियों को उत्तरदायित्व दे दिया गया। जिन्हें शिक्षक अथवा अध्यापक कहा जाने लगा और शिक्षण के लिए विशेष

रूप से निर्धारित स्थान को विधालय कहा जाने लगा। समाज एवं संस्कृति के विकास के लिए यह शिक्षण प्रत्येक काल एवं समाज में हो रहे है तथा आने वाले समय में भी होते रहेगें।

2. शिक्षण का अर्थ एवं परिभाशाः–

शिक्षण सीखने की वह क्रिया है जिसमें कक्षागत शिक्षण एवं छात्र के मध्य अन्तः क्रिया होती है तथा जिससे दोनो का विकास होता है।

शिक्षा का अभिप्राय निम्नलिखित तीनों रूपों में अभिव्यक्त कर सकते हैः–

1. ज्ञान के रूप में
2. विधालय में दी जाने वाली शिक्षा के रूप में
3. निरन्तर चलने वाली तथा व्यवहार में परिवर्तन करने वाली पक्रिया के रूप में।

इस प्रकार शिक्षण एक उच्चतम व्यवसायिक क्रिया है। शिक्षक अथवा निर्देशक कक्षा में अथवा कक्षा के बाहर जो कुछ भी करते है, वह सभी व्यवहार अथवा निर्णय शिक्षक में निहित होते है।

"The teaching is a highly skilled professional activity and a great deal of what teachers, instructors do, both in and out side the classroom involves making decision of one kind or another."

I. K. Davies

अध्यापक शिक्षा की अवधारणाः– आदिकाल से ही समाज में अध्यापक का विशिष्ट एवं सम्मानित पद रहा है। आज भी अध्यापक को युगद्रष्टा, समाज–सुधारक तथा राष्ट्र निर्माता आदि विभूषणों से विभूषित किया जाता है शिक्षा की सफलता या असफलता, अध्यापक पर निर्भर करती है। अध्यापक विधालय संगठन का ह्रदय एवं आधार है। बालक का सर्वागीण विकास करने का उत्तरदायित्व हुई है। 'Aptus' शब्द लैटिन भाषा का शब्द है जिसका अर्थ 'योग्यता' या 'सुविधा' है। अभिवृति एक परिकल्पनात्मक तथ्य है क्योंकि अभिवृति को प्रत्यक्ष रूप से देखा नही जा सकता लेकिन इसके प्रभावों को अनुभव किया जा सकता है। अभिवृति एक परिकल्पनात्मक तथ्य होते हुए भी मनोवैज्ञानिकों के लिए बहुत महत्वपूर्ण रहा है क्योंकि अभिवृति का सम्बन्ध अनुभव और व्यवहार की अभिवृति और निर्धारण ने अभिवृत्तियों की महत्वपूर्ण भूमिका है। अभिवृत्तियों के महत्व को आज अधिकांशतः मनोवैज्ञानिकों द्वारा स्वीकार किया जाता है।

जेम्स ड्रेवर (1968) के अनुसार– ''अभिवृति , मत, रूचि अथवा उद्देश्य की एक लगभग स्थायी तत्परता प्रवृति है, जिसमें एक विशेष प्रकार के अनुभव की आशा और उचित प्रतिक्रिया कह तैयारी निहित होती है।''

गुड महोदय के अनुसार – ''प्रतिक्रियाएँ सहज एवं स्वाभाविक होती है। किसी विशेष परिस्थिति में अपने स्वरूप को ज्ञात करने के लिए ये प्रतिक्रियाएँ पहले से ही निर्धारित रहती है।''

समस्या कथन– '' शिक्षण व्यवसाय के प्रति बी0 एड0 के विधार्थियों की अभिवृत्ति का अध्ययन''
" A study of the attitude of B.Ed students towards teaching profession."

अ) **शिक्षण व्यवसाय–** व्यवसाय से तात्पर्य शिक्षण कार्य करने से है।

ब) **बी0 एड0 के विधार्थियों से तात्पर्यः–** –स्नातक उत्तीर्ण करने के बाद 'बैचलर ऑफ एजुकेशन' डिग्री अन्तर्गत शिक्षक प्रशिक्षण प्राप्त कर रहे छात्राध्यापक एवं छात्राध्यापिकाओं से है।

स) **बी0 एड0 के विधार्थियों की अभिवृत्ति से आशय–** बी0 एड0 के विधार्थियों द्वारा व्यवसाय के प्रति उनके उनके दृष्टिकोण जानने से है कि शिक्षण को एक नकारात्मक या सकारात्मक कैसी है?

परिभाषीकरण–

"A study of the attitude of B.Ed students towards teaching profession."
''शिक्षण व्यावसाय के प्रति बी0 एड0 के विधार्थियों की अभिवृत्ति का अध्ययन''

अ) **शिक्षण व्यावसाय** – प्रस्तुत अध्यापन व्यवसाय से तात्पर्य शिक्षण कार्य को एक व्यवसाय के रूप में स्वीकार करने से है।

ब) **बी0 एड0 के विधार्थियों से तात्पर्य**– 'स्नातक उत्तीर्ण करने के बाद 'बैचलर ऑफ एजुकेशन ' डिग्री के अन्तर्गत शिक्षक प्रशिक्षण प्राप्त कर रहे छात्राध्यापक एवं छात्राध्यापिकाओं से है।

स) **बी0 एड0 के विधार्थियों की अभिवृति से आशयः**– बी0 एड0 के विधार्थियों द्वारा शिक्षण व्यवसाय के प्रति उनके दृष्टिकोण जानने से है कि शिक्षण को एक व्यवसाय बनाने के प्रति उनकी सोच नकारात्मक या सकारात्मक कैसी है?

शैक्षिक महत्वः– शैक्षिक महत्त्व निम्नलिखित है–

1. छात्राध्यापकों की भाँति छात्राध्यापिकाओं की अभिवृत्ति भी अध्यापन व्यवसाय के प्रति धनात्मक है। इससे स्पष्ट होता है कि छात्राध्यापक, छात्राध्यापिकाओं की भांति अच्छे अध्यापक हो सकते है।
2. सरकारी शिक्षक–प्रशिक्षण संस्थाओं की भांति ही स्वपित्तपोषित शिक्षण संस्थान अच्छे अध्यापकों का निर्माण कर सकते है।
3. वर्तमान समय की शिक्षक–प्रशिक्षण संस्थाओं मे प्रवेश प्रक्रिया को इस प्रकार बना सकते है कि अध्यापन व्यवसाय के प्रति घनात्मक अभिवृत्ति वाले विधार्थी ही प्रवेश पा सके।

निष्कर्षः–

शिक्षा ज्ञान की इकाई है और अज्ञात विषय एवं घटनाओं के प्रति अन्वेषण अथवा कारण खोजने प्रवृति मानव स्वभाव का अंग है। आधुनिक युग में हमारे आर्थिक तथा सामाजिक जीवन में व्यवसाय का विशेष महत्व है।

हमारे सांस्कृतिक विकास का गुप्त रहस्य व्यवसाय में निहित है। व्यवसाय नये सत्यों की खोज द्वारा अज्ञानता के क्षेत्रों को समाप्त कर देता है और वे सत्य हमें कार्य करने की श्रेष्ठतर विधियाँ तथा उत्तमतर परिणाम प्रदान करते है। इस प्रकार अनुसंधान एक ऐसी प्रक्रिया, एक ऐसा प्रयास है,जिसके माध्यम से वर्तमान घटनाओं, तथ्यों यथार्थताओं एवं सत्यों से सम्बन्धित ज्ञान का विकास किया जाता है। विधार्थियों की अभिवृति उनके आधार पर वर्तमान सिद्धान्तों में परिवर्तन करके उनमे सुधार लाने का प्रयास करते है तथा उन्हें अधिक उपयुक्त बनाते है अथवा नये सिद्धान्त का निरूपण करते है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूचि

1. सारस्वत मालती (डा0) एवं सिह मधुरिमा (डा0) 2012 शिक्षा मनोविज्ञान की रूपरेखा, आलोक प्रकाशन, लखनऊ और इलाहाबाद।
2. पाण्डेय रामशकल (डा0), 2011, उदीयमान भारतीय समाज मे शिक्षक, अग्रवाल पब्किेशन्स।
3. कुलश्रेष्ठ एस0 पी0 (डा0) 2011, शैक्षिक तकनीकी के मूल आधार, श्री विनोद पुस्तक मन्दिर आगरा–2
4. शर्मा आर0 ए0 (डा0) 2009 शिक्षा अनुसंधान, आर लाल बुक डिपो, मेरठ
5. सक्सेना आर0 ए0 स्वरूप एवं ओबेराय एस0 सी (डा0) 2008 शैक्षिक तकनीकी एवं प्रबंधन के मूलभूत तत्व, आर लाल बुक डिपो।
6. लाल रमन बिहारी (प्रो0) एवं मल्होत्रा नीरू (डा0) 2008 उदीयमान भारतीय समाज में शिक्षा, आर लाल बुक डिपो मेरठ।
7. सारस्वत, मालती एवं कुमार, कुमुद– शिक्षा मनोविज्ञान की रूपरेखा इलाहाबाद, आलोक प्रकाशन, 2005
8. भट्टाचार्य, जी0सी0 – अध्यापक शिक्षा –आगरा विनाद पुस्तक मन्दिर , आगरा, 2005

डॉ. श्रीमती सुचिता इलायस
प्रवक्ता बी. एड. विभाग , सेन्ट ऐन्ड्रयूज कॉलेज गोरखपुर यू.पी.